डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस कॉलेज
सहरसा

(11) प्रश्न :→ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के जन्म के कारणों पर प्रकाश डालें।

उत्तर :→ विभिन्न राजनीतिक संगठनों के प्रयास स्वरूप भारत में राष्ट्रीयता की भावना का तेजी से विकास हो रहा था। इसका प्रसार सिर्फ मध्यम वर्ग तक ही सीमित नहीं था, बल्कि समाज के विभिन्न तबके के लोग अपनी-अपनी सुरक्षा हेतु संगठन का रास्ता अपना रहे थे। आवश्यकता इस बात की थी कि इन सभी प्रयासों को एकबद्ध और संगठित कर किसी राष्ट्रीय संस्था की स्थापना की जाय जो संपूर्ण देश में रहने वाले विभिन्न वर्गों के हितों की सुरक्षा कर सके इसीलिए तो Indian National Conference ने इस दिशा में प्रयास प्रारंभ किया और वास्तविक कार्य भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ ही शुरू हुआ।

(1) कांग्रेस की स्थापना :→ अब सवाल यह उठता है कि कांग्रेस की स्थापना क्यों हुई? इसके क्या उद्देश्य थे? इस संबंध में विद्वानों का एकमत नहीं है। प्रसिद्ध इतिहासकार आयोध्या प्रसाद सिंह जी का कहना है कि राष्ट्रीय आंदोलन निश्चित तौर पर साम्राज्यवादियों एवं उपनिवेशवादियों के हस्तक्षेप का परिणाम था। वैसे यह भी सही है कि कांग्रेस की स्थापना ए० ओ० ह्यूम ने की थी। और इसमें लार्ड रिपन और डफरिन का भी समर्थन प्राप्त था। वास्तव में ह्यूम साहब भारत में बढ़ते आंदोलन तथा अशांति से चिन्तित थे। क्रांतिकारी आंदोलन की आशंका एवं मध्यमवर्गीय

भारतीयों का इंग्लैंड के उदारवादियों से मोह भंग होना आदि ऐसी घटना थी। जिसने ह्यूम महोदय को चिंतित कर दिया था। कि अब उनके सामने एक ही सवाल खड़ा हो गया था कि कैसे ब्रिटिश सरकार विरोधी आंदोलन को कम किया जाय। इसीलिये तो उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के रूप में एक सुरक्षा कपाट की व्यवस्था करने का निश्चय किया जो भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को अमेरिका तथा इटली द्वारा अपनाये गये। सशस्त्र आंदोलन के मार्ग पर जाने से रोक सकें।

(ii) कांग्रेस का उपयोग एक सुरक्षा के रूप → लेकिन कुछ विद्वानों ने यह भी कहा है कि शायद संभावित रूसी आक्रमण से रक्षा हेतु ही ह्यूम महोदय ने अंग्रेजों कांग्रेस की स्थापना की योजना बनायी थी। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का विचार उस समय देश की जनता के सामने रखा जब भारत पर रूसी आक्रमण का विशेष भय था। या हम ऐसा भी कह सकते हैं कि वस्तुतः कांग्रेस की स्थापना के पीछे कुछ राजनीतिक उद्देश्य थे। विदेशी होते हुये भी ह्यूम महोदय भारतवासी के हमदर्दी थे। यही कारण है कि उन्होंने कांग्रेस का उपयोग एक सुरक्षा नली के रूप में करने का निश्चय किया। इस दौरान उन्होंने अपनी योजना पर भारतीय नेताओं से बातचीत की और तत्पश्चात लॉर्ड रिपन से भेंटकर उनके सामने अपनी योजना रखी और उन्हीं के विस्तार से 1 मार्च 1883 ई० को कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्नातकों के नाम एक पत्र लिखकर भारत के नैतिक

कांग्रेस का उपयोग एक सुरक्षा के रूप में

मानसिक समाजिक एवं राजनीतिक पुनरुत्थान हेतु एक संगठन बनाने की बात कही और उसका नाम Indian National Union रखने की योजना बनायी तथा उसका प्रथम अधिवेशन पूना मे 25-31 Sep 1885 को होना निश्चित हुआ। इसके बाद 28 Dec 1885 को 12 बजे दिन मे गोकुल दास तेज पाल संस्कृत महाविद्यालय बंबई मे इसका प्रथम अधिवेशन हुआ, जिसकी अध्यक्षता उमेशचन्द्र बनर्जी ने की। इसमे देश के विभिन्न भागो से 100 प्रतिनिधियो ने भाग लिया था जिसमे सभी तबके के लोग सम्मिलित थे।

(i) नागरिक सुरक्षा एवं विदेशनीति :→ प्रारंभ मे कांग्रेस का कार्य नागरिक अधिकारो की सुरक्षा की माँग को उठाना था। इस क्रम मे 1897 मे बाल गंगाधर तथा कई अन्य नेताओं को अनेक उनके द्वारा दिये गये भाषणो एवं लेखो के आधार पर गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया और उन्हें जेल मे डाल दिया गया। इतना ही नहीं बल्कि कई लोगों को बिना मुकदमा चलाये ही भारत से निर्वासित कर दिया गया। इससे भारतीयों का असंतोष पराकाष्ठा पर पहुँच गया। समूचे देश में आंदोलन शुरू हो गये जिसमें कांग्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका रही। बाध्य होकर सरकार ने प्रेस पर प्रतिबंध लगा दी और पुलिस के अधिकारों को बढ़ा दिया गया। लेकिन

इन नए कानूनों द्वारा राष्ट्रवादियों और असामाजिक तत्वों का एक नया स्थान मिला। फलतः नागरिक अधिकारों के सुरक्षा की माँग दिन-प्रतिदिन बढ़ती चली गई। दूसरी बात यह भी है कि अब राष्ट्रीय आन्दोलन का एक नया दौड़ शुरू हुआ जिसने उग्र राष्ट्रीयता को जन्म दिया।

(ii) **साम्राज्यवाद का आर्थिक विवेचन :→** संभवतः प्रारंभिक दौर के राष्ट्रवादियों का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक काम साम्राज्यवाद का विवेचन था। दूसरी बात यह भी है कि इन राष्ट्रवादियों ने भारत की गरीबी हेतु सरकारी नीतियों को उत्तरदायी माना दादाभाई नौरोजी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Poverty and unBritish rule in India में अंग्रेजी साम्राज्यवाद की आर्थिक दुष्परिणामों की विवेचना की है। इतना ही नहीं बल्कि उन्होंने कांग्रेस की बगान मजदूरों की दशा सुधारने तथा नमक कर समाप्त करने की माँग की सभी लोग खादी पहनना शुरू किये और महाराष्ट्र में विदेशी कपड़ों की होली जलायी गयी।

(iii) **कांग्रेस की कार्यप्रणाली और जनसमर्थन का पक्ष :→** अपने शैशवकाल में कांग्रेस ने संवैधानिक सीमांतर्गत रहते हुये विभिन्न सुधारों की माँग की। इसके साथ ही उन्होंने ब्रिटेन में भारत के प्रति जनमत तैयार करने का प्रयास किया। दूसरी बात यह है कि 1885 ई० से 1895

ई० के बीच उदारवादी कांग्रेसियों ने जो नितियाँ अपनायी उसने कांग्रेस के एक वर्ग के अन्दर असंतोष की भावना भर दी। इस क्रम में अरविन्द घोष ने महत्वपूर्ण भुमिका निभायी। वैसे कांग्रेस की स्थापना में अंग्रेजो ने सहयोग किया था। लेकिन कांग्रेस द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन को बढ़ावा देने से धीरे-धीरे अंग्रेजो का दृष्टिकोण कांग्रेस के प्रति बढ़ता चला गया। इसीलिये तो कांग्रेस के प्रभाव को कम करने हेतु सरकार ने फुट डालो और राज्य करो की नीति अपनायी। एक तरफ नाममात्र के सुधारों का दिखावा कर नरमपंथियों को संतुष्ट करने का प्रयास किया गया वही दूसरी तरफ भय और बल का प्रदर्शन किया गया।

राजनीतिक अधिकारों की मांग:- वैसे यह बात अलग है कि उदारवादी युग में कांग्रेस का मुख्य कार्य राष्ट्रीय राजनीतिक जागरण को पैदा करना था। साथ ही उन्होंने भारत के वर्ग विशेष हेतु राजनीतिक अधिकारों की मांग की तथा प्रशासनिक व्यवस्था में परिवर्तन लाने का प्रयास किया एवं नागरिक अधिकारों की सुरक्षा हेतु संघर्ष किया। इसमें ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की कटु आलोचना कर स्वदेशी की भावना को विकसित किया। कांग्रेस के शैशवकाल में ही इसकी नीतियों को संचालित करने की जिम्मेवारी उदारवादी नेताओं ने ले ली जिनमें दादाभाई नौरोजी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, गोपाल

कृष्ण गोखले, फिरोजशाह मेहता, ए. ओ ह्यूम प्रमुख है। वैसे उग्रवादी विचारधारा को विकसित करने में राजनीतिक कारण सर्व प्रमुख रहे। जो कुछ भी हो इतना तो अवश्य है कि कांग्रेस की स्थापना तथा इसके विकास में स्कॉटलैंड निवासी ह्यूम का स्थान महत्वपूर्ण है। कांग्रेस की स्थापना का श्रेय उन्ही को दिया जाता है।

निष्कर्ष :→ इस प्रकार निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते है कांग्रेस की स्थापना का राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। कांग्रेस ने विनम्रता पूर्वक ही स्वतंत्रता आंदोलन की शुरुआत की थी जिसकी अंतिम परिणति यह हुई कि अंग्रेज को लाचार एवं बेबस होकर भारत छोड़कर जाना पड़ा।

निष्कर्ष